मूल असमीया पाठ	हिन्दी अनुवाद
बशिष्ठ प्रमुख्ये बुलिबंत पात्रगण। नराखिबा रामचंद्रे काहार बचन॥ निष्ठुर बचन रामे बुलि भरतक। पुनरपि पालटाइ पठाइबा राज्यक॥51	वशिष्ठ के सहित बोलेंगे पात्रगण। नहीं मानेंगे श्रीराम किसी का वचन॥ निष्ठुर वचन कह राम भरत से। फिर वापस भेजे देंगे राज्य के लिए॥51
पाचे रामचंद्र सीता लक्ष्मण सहिति। फल-मूल मांस शाक भुंजि मन प्रीति॥ शिरे जटा परिधान बाकलि बसन। कतो तृण शिला मृग चर्म्मत शयन॥52	फिर राम सीता और लक्ष्मण के साथ। आनंद खायेंगे फल, मांस और शाग॥ शर में जटा होगी वल्कल ही वसन। तृण,शीला, मृग चर्म पर वे शयन॥ 52
एहिमते रामचंद्रे बंचिबा बनत। कतोदिन थाकि चित्रकूट पर्ब्बतत॥ बेढ़ाइबंत रामे पाचे ऋषिर आश्रमे। सुतीक्ष्न ऋषिर घरे याइबंत प्रथमे॥53	इसतरह श्रीराम बसेंगे वन में। कुछ दिन फिर रहेंगे चित्रकूट में ॥ राम ऋषि के आश्रम भ्रमण करेंगे। पहले सुतीक्ष्ण ऋषि के घर चलेंगे॥53
शरभंग ऋषिक देखिबा तातपर। तात पाचे बधिबा बिराध निशाचर॥ घरे घरे ऋषिर आश्रमे निरंतरे। याइब दश बत्सर फुरंते रघुबरे॥54	वहाँ जाकर शरभंग ऋषि मिलेंगे। फिर विराध असुर का बध करेंगे॥ निरंतर ऋषियों के आश्रम जायेंगे। घूमते-फिरते यूँ दस वर्ष बीतेंगे॥54
पाइबंत हरिष रामे ऋषि संभाषणे। अगस्त्यत पुछि याइब पंचबटी बने॥ तथात करिब रामे हरिषे निबास। शूर्पणखा याइबा कामे राघबर पाश॥55	ऋषि संभाषण से राम हर्षित होंगे। अगस्त्य से पूछ वे पंचवटी जायेंगे॥ वहाँ राम आनंद से करेंगे निवास। काम से शूर्पनखा चली राम के पास॥55
लक्ष्मणे काटिब ताइर धरि नाक काण। खर-दूषणर शूर्पणखा दिब जान॥ चतुर्द्दश सहस्त्र राक्षस समन्विते। खर-दूषणक रामे बधिबा तहिते॥56	लक्ष्मण काटे देंगे उसकी नाक,कान।। शूर्पनखा जा बतायेगी खर-दूषण॥ आयेंगे चौदह हजार राक्षस साथ। खर-दूषण साथ राम करेंगे बध॥ 56
खर-दूषणर बध देखि बिद्यमान। राबणर आगे शुर्पणखा दिब जान॥	खर-दूषण का बध विद्यमान देखा। रावण के आगे बतायेगी शूर्पनखा॥

सीतार रूपर कथा कहिब प्रचुर।
शुनिया बावण राजा हैब कामातुर॥57

सीताक हरिते यत्न करिब बिस्तर।
रथ लैया याइबा राजा मारीचर घर॥
मारीचे बिस्तर बुजाइबेक रावणक।
तथापि रावणे तार नशुनिबे बाक॥58

मारीचक लगे लैया दुर्ज्जन रावण।
सीताक हरिबे याइबे दंडुकार बन॥
रामर शरत मृत्यु जानि आपुनार।
धरि मृगरूप सिटो सुवर्ण आकार॥59

फुरिबे मारीच चरि आगत रामर।
देखि रामचंद्रे याब धरि धनुशर॥
निबेक रामक बिदूरक निशाचर।
रामर शरत तेजिबाक कलेबर॥60

मरंते तेजिब राव रामर समान।
शुनि सीता गोसानीर उरिब पराण॥
रामक राक्षसे मारे सीता हेन जानि।
लक्ष्मणक बुलिबेक दुराक्षर बाणी॥61

शुनिया सीताक तेजि याइबंत लक्ष्मणे।
शून्य स्थाने सीता हरि निबेक रावणे॥
सीतार कारणे युद्ध करिब जटायु।
पाखा छेदि रावणे हरिब तार आयु॥62

थैबेक सीताक निया अशोकर बने।
राक्षसिनीगण रक्षा दिबेक रावणे॥
देखि ब्रह्मा बुलिलंत इंद्र देवताक।
अमृत पायस निया दियोक सीताक॥63

इंद्रे निया पायस दिबंत तेतिक्षण।
देखि सीतादेवी ताक करिब भक्षण॥

सीता के रूप की कथा कहेगी प्रचुर।
सुन राजा रावण होगा यूँ कामातुर॥57

सीता हरण के लिए प्रयास विस्तार।
रथ से जायेगा राजा मारीच के घर॥
मारीच राजा रावण से समझायेगा।
तथापि रावण वाक्य न मानेगा॥58

मारीच लेकर चला दुर्जन रावण।
सीता हरण को जायेगा दंडक वन॥
राम के बाण से मृत्यु होगी जानकर।
सुवर्ण मृगरूप का सुंदर आकार॥59

मारीच चरता रहा राम के सामने।
श्रीराम धनुष के साथ उसके पीछे॥
श्रीराम को दूर ले जायेगा निशाचर।
राम के बाण से त्यागने को कलेवर॥60

राव करेगा मारीच राम के समान।
सुन सीता देवी के उड़ जायेंगे प्राण॥
मानकर राक्षस ने राम को है मारा।
सीता ने लक्ष्मण से कठोर वाक्य कहा॥61

सुन सीता की वाणी चल पड़ें लक्ष्मण।
अकेली सीता हरण करेगा रावण॥
सीता के लिए युद्ध करता है जटायु।
पंख काटकर रावण हरेगा आयु॥62

सीता को रखेगा वह अशोक वन में।
राक्षसियाँ राखी होंगी सीता के संग में॥
देखकर ब्रह्मा कहेंगे इंद्र देव को।
अमृत खीर देकर आइए सीता को॥63

खीर लेकर जायेंगे देवेंद्र तत्क्षण।
देखके सीता उसका करेंगी भक्षण॥

नपाया सीताक पाचे श्रीराम लक्ष्मण।
महाशोके दुयो भाइ करिब क्रंदन॥64

बधिबा कवन्ध रामे सीताक खोजंते।
ऋष्यमुख पाइबा गइ दंडुकार हंते॥
तथा रामचंद्रे कार्य्य करिबा बिचित्र।
सुग्रीव बानर समे रामे करि मित्र॥65

बानरर राजा बीर बालीक बधिब।
तार यत राज्यभार सुग्रीवक दिब॥
पासरिब रामक सुग्रीव राज्य भोले।
लक्ष्मणे तज्जिब ताक राघवर बोले॥66

कपि सेनागण लैया बानर नृपति।
रामर चरणे नमि करिब प्रणति॥
पांचिबा बानरगण रामर आदेशे।
सीताक खुजिबे पठाइबा देशे देशे॥67

लगत सहाय दिब बीर हनुमंत।
दक्षिण दिशक अंगदक पांचिबंत॥
बिवारिया सीताक फुरिबा कपिजाक।
संपातिर मुखे पाइबा सीतार बार्त्ताक॥68

शिंशपा बृक्षर तले लंकात आछंत।
सागर एराइबा डेवे बीर हनुमंत॥
देखिबा सीताक येबे बायुर तनय।
रामर बार्त्ताक कहिबंत महाशय॥69

रामर आंगठि निया सिताक दिबंत।
हिये मुठि हानि सीता देवी कान्दिबंत॥
हाते तृण धरि बीरे सीताक बुजाइब।
कपिर कातरे सीता गोसानी जुराइब॥70

अशोक बनत पशि बायुर नंदन।
करिबंत छन्न रावणर मधुबन॥

सीता को न पाकर रामचन्द्र-लक्ष्मण।
शोक से भाइयों ने किया क्रंदन॥64

सीता के संधान में राम कवन्ध बाधेंगे।
दंडक होकर ऋष्यमुख पहुँचेंगे॥
वहाँ रामचन्द्र कर्म करेंगे विचित्र।
वानर सुग्रीव संग राम होंगे मित्र॥65

वानरों के राजा बाली का बध करेंगे।
समस्त राज उसका सुग्रीव को देंगे॥
राज्य पाकर सुग्रीव राम को भूलेगा।
राम आज्ञा से लक्ष्मण उसे त्याग देगा॥66

सेना को साथ लेकर वानर नृपति।
श्रीराम के चरणों में करेगा प्रणति॥
भेजेगा वानर वह राम का आदेश।
सीता के संधान में अनेक नाना देश॥67

वीर हैं हनुमान करेंगे सहायता।
अंगद भेजा जायेगा दक्षिण दिशा॥
सीता के संधान में कपिगण घूमगा।
संपाती द्वारा सीता का संदेश मिलेगा॥68

हैं सीता लंका में शिंशपा वृक्ष के नीचे।
सागर लांघ पवनपुत्र पहुंचेंगे॥
वीर हनुमान सीता से जा मिले लेंगे।
राम का संदेश सीता से वीर कहेंगे॥69

सीता माता को देंगे वे राम की अंगूठी।
हृदय पीटकर सीता देवी रोयेंगी॥
समझायेंगे विनीत हो सुनेंगी सीता।
धीरज रखेंगी सुन कपि की प्रार्थना॥70

अशोक वन में घुस वायु के नन्दन।
नष्ट करेंगे वे रावण का मधुवन॥

अनेक राक्षस मारि निबा यमघर।	अनेक राक्षसों को भेजेंगे यमघर।
अक्षकुमारक मारिबंत बीरबर॥71	अक्षय कुमार बध किया वीरवर॥71
पाचे नागपाश हानिबंत इंद्रजिते।	नागपाश से आघात किया इंद्रजीत।
हैबा बंदी रावणक देखिबार चित्ते॥	वंदी होंगे रावण को देखने का चित्त॥
राक्षसे योगाइब निया रावणर आगे।	राक्षस रावण के सामने ले जायेंगे।
बिस्तर भर्त्सिबा रावणक महाभागे॥72	विस्तार से रावण की भर्त्सना करेंगे॥72
कपिर बचने महाकोपे लंकेश्वर।	कपि वचन से कोपित हो लंकेश्वर।
लगाइबे लांगले जुइ मेढ़ाया कापोर॥	पूंछ जलायेगा कपड़े लपेटकर॥
होहकाया नागपाश पवननंदन।	नागपाश से मुक्त हो पवननंदन।
लगाया आगनि लंका करिबंत छन्न॥73	आग लगाकर लंका को करेंगे छिन्न॥73
सागर लंघिब डेवे पृथिवीक आसि।	सागर अतिक्रम से पृथ्वी में आकर।
कहिबा सीतार बार्त्ता रामत हरिषि॥	देंगे वे सीता की वार्ता हर्षित होकर॥
सीतार मातार मणि रामक दिबंत।	सीता माता की मणि रामचन्द्र को देंगे।
देखि हिये मुठि हानि राम कांदिबंत॥74	उसे देखकर राम बहुत रोयेंगे॥74
सुग्रीब लक्ष्मणे धरि रामक बुजाइबा।	सुग्रीव लक्ष्मण राम को समझयेंगे।
दुइरो प्रबोध रामे किंचित जुराइबा॥	दोनों के प्रबोध से राम शांत से होंगे।
पाचे कपिसेना समे राम महाबीर।	वानर सेना के साथ राम महावीर।
आपुनि चलिया याइबा सागरर तीर॥75	स्वयं भी चल पड़ेंगे सागर के तीर॥75